मेहनत वो सुनहरी चॉबी है जो भविष्य के बंद दरवाजे भी खोल देती है।

– अज्ञात

सुनें ग्रेटा थनबर्ग की आवाज

अपनी खोखली बातों से आपने मेरे सपने और मेरा बचपन छीन लिया है। लोग त्रस्त हैं, लोग मर रहे हैं, पूरी पारिस्थितिकी ध्वस्त हो रही है। हम सामूहिक विलुप्ति की कगार पर हैं और आप पैसों के बारे में तथा आर्थिक विकास की काल्पनिक कथाओं के बारे में बातें बना रहे हैं।

तरूण भटनागर

जलवायु परिवर्तन को लेकर स्वीडन की 16 वर्षीय पर्यावरण ऐक्टिविस्ट ग्रेटा थनबर्ग ने जो सवाल उठाए हैं, उन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सोमवार को संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने विश्व भर के नेताओं से जो कुछ कहा, उसमें नई पीढ़ी की आवाज शामिल है, तमाम पर्यावरणविदों के अलावा उन आम लोगों की चिंताएं भी शामिल हैं, जो दुनिया को क्रुद्ध मौसमों के उत्पात से बचाना चाहते हैं और आबोहवा को जीने लायक बनाना चाहते हैं।

ग्रेटा ने अपने संबोधन में संसार के तमाम बड़े नेताओं पर ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से निपटने में नाकाम रहने और इस तरह नई पीढ़ी से विश्वासघात करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अपनी खोखली बातों से आपने मेरे सपने और मेरा बचपन छीन लिया है। लोग त्रस्त हैं, लोग मर रहे हैं, पूरी पारिस्थितिकी ध्वस्त हो रही है। हम सामूहिक विलुप्ति की कगार पर हैं और आप पैसों के बारे में तथा आर्थिक विकास की काल्पनिक कथाओं के बारे में बातें बना रहे हैं।

ग्रेटा ने गुस्से में पूछा कि ऐसा करने की आपकी हिम्मत कैसे हुई? बताना जरूरी है कि अगस्त 2018 से ग्रेटा हर शुक्रवार को अपना स्कूल छोड़कर जलवायु परिवर्तन के लिए आवाज उठा रही हैं। वह स्वीडिश संसद के बाहर धरने पर बैठ चुकी हैं और संयुक्त राष्ट्र के अलावा ब्रिटिश, इटैलियन और यूरोपियन संसद में भी बोल चुकी हैं। उनके आंदोलन से प्रभावित होकर बीते 20 सितंबर को 150 देशों में आंदोलन हुए। ग्रेटा ने ज्यादा कार्बन उत्सर्जन के चलते हवाई यात्रा छोड़ दी और जमीन के रास्ते या नाव से यात्रा करती हैं। कुछ लोग ग्रेटा पर हंस सकते हैं, उनके मूवमेंट को बचपना बता सकते हैं, लेकिन पर्यावरण को लेकर उठने वाली आवाजों को रोकना अब बहुत मुश्किल है। यह एक विडंबना है कि राजनीतिक नेतृत्व के लिए यह अब भी कोई मुद्दा नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप इसे बौद्धिकों की एक सनक के रूप में देखते हैं, जबकि संकट हमारे जीवन में, हमारी आंखों के सामने बिल्कुल साफ खड़ा है।

कुछ समय पहले विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) की एक रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट' में कहा गया था कि राजनेताओं के रवैये के कारण पेरिस संधि का लक्ष्य निर्धारित समय पर तो क्या, देर से भी पूरा होना कठिन है, जिसके चलते हालात सुधरने के बजाय दिनोंदिन और बिगड़ते ही जा रहे हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक कार्बन उत्सर्जन में कमी न आ पाने के चलते ही बीते पांच साल धरती के दर्ज इतिहास में पांच सबसे गर्म सालों के रूप में छप गए हैं। इसके दुष्परिणाम के रूप में हमारे महानगर लगातार गैस चौंबर में तब्दील होते जा रहे हैं और कहीं सूखा कहीं बाढ़ का सिलसिला हम देख ही रहे हैं। बहरहाल, अब भी देर नहीं हुई है। दुनिया का राजनीतिक–आर्थिक नेतृत्व अगर समझदारी का परिचय दे तो जलवायु परिवर्तन से निपटने की मुहिम को कामयाबी तक पहुंचाया जा सकता है।

मोक्ष का रास्ता

मानसी चोकसी

धर्म-दर्शन

जैन धर्म के मुताबिक लगातार कई दिनों तक उपवास करके, अपनी इच्छा से शरीर छोड़ने का संकल्प 'संथारा' या 'सलेखना' है। उनके लिए यह धार्मिक अनुष्ठान है, धार्मिक अधिकार है, लेकिन कानून कहता है, यह आत्महत्या है और इसी के चलते 'संथारा' काफी सालों से विवादास्पद मुद्दा बना हुआ है।

जैन समाज के बीच उनको यह सम्मानजनक रुतबा उस दिन मिला, जब उन्होंने संथारा करने का निर्णय लिया। अपने बच्चों, पत्नी और गुरु की उपस्थिति में, केशवजी ने शरीर छोड़ने का संकल्प लिया। उन्होंने अपने पुराने कर्मों के परिष्करण से आत्मा की शुद्धि करने और फिर से नए कर्म न करने का संकल्प लेते हुए 'मौत के प्रति उदासीन' रहना तय किया। संथारा एक संकल्प है। जब जीवन के सभी मकसद पूरे हो जाते हैं या जब शरीर कोई मकसद पूरा करने के काबिल नहीं रहता, संथारा करना चाहूंगी।

संपादकीय

महाभियोग का फंदा

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को गहरा झटका लगा है। उनके खिलाफ महाभियोग की प्रक्रिया शुरू हो गई है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की स्पीकर नैन्सी पलोसी द्वारा महाभियोग की प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा के बाद डेमोक्रेट्स ने औपचारिक तौर पर इसकी तैयारी शुरू कर दी। ट्रंप पर आरोप है कि उन्होंने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की पर दबाव बनाया कि वह उनके डेमोक्रेटिक प्रतिद्वंद्वी जो बाइडन और उनके बेटे के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच शुरू करें। पूर्व उप राष्ट्रपति जो बाइडन 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप को कड़ी टक्कर दे सकते हैं। ट्रंप ने इन आरोपों से साफ इनकार किया है, हालांकि इतना माना है कि अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदी के बारे में यूक्रेन के राष्ट्रपति से चर्चा उन्होंने की थी।

इससे पहले अमेरिका के इतिहास में केवल दो राष्ट्रपतियों एंड्रयू जॉनसन और बिल क्लिंटन के खिलाफ महाभियोग की कार्रवाई हो चुकी है पर इनकी कुर्सी नहीं गई। रिचर्ड निक्सन के खिलाफ भी महाभियोग की नौबत आई थी, लेकिन उसके पहले ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया। विशेषज्ञ मान रहे हैं कि ट्रंप की सत्ता भी फिलहाल सुरक्षित रहेगी क्योंकि महाभियोग की प्रक्रिया निचले सदन में पूरी भी हो जाती है तो रिपब्लिकन बहुमत वाली सीनेट से उसका पास होना मुश्किल है। ट्रंप एक ही सूरत में हट सकते हैं, जब कम से कम 20 रिपब्लिकन सांसद उनके खिलाफ विद्रोह का झंडा उठा लें। फिलहाल इसकी गुंजाइश कम ही है। उलटे कहा यह जा रहा है कि महाभियोग का प्रस्ताव रिपब्लिकन्स को एकजुट कर देगा। संभव है, सियासी गणित में ट्रंप बाजी मार ले जाएं लेकिन राष्ट्रपति के खिलाफ महाभियोग आना अमेरिकी लोकतंत्र के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है।

बैंक डूबने की आशंका से उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। आश्चर्य है कि पीएमसी में पिछले दस सालों से घपला जारी था, फिर भी किसी को इसकी भनक नहीं लगी।

बचत पर आफत

शुभांगी अत्री

मुंबई के पीएमसी (पंजाब ऐंड महाराष्ट्र कोऑपरेटिव) बैंक में जारी संकट ने सोमवार को बैंक के एक ग्राहक संजय गुलाटी की मौत से और भी दुखद मोड़ ले लिया। बैंक के अन्य ग्राहकों के साथ संजय सोमवार को ही विरोध प्रदर्शन में शामिल हुए थे। स्थानीय लोगों के मुताबिक वहां से लौटने के बाद उन्हें दिल का दौरा पड़ा और अस्पताल पहुंचाए जाने से पहले ही उनका निधन हो गया। जेट एयरवेज में अपनी नौकरी खोने के बाद से वह अपने 80 वर्षीय पिता और एक ऑटिस्टिक बच्चे समेत अपने परिवार की गाड़ी इस बैंक में जमा 90 लाख रुपयों के बूते ही खींच रहे थे। पैसे न निकाल पाने से घर चलाना उनके लिए बहुत मुश्किल हो गया था।

बताने की जरूरत नहीं कि इस बैंक के जमाकर्ताओं का हाल बहुत बुरा है। इनमें कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने जीवन भर की कमाई पीएमसी बैंक में ही जमा कर रखी है और इसी जमा–पूंजी से उनका जीवन चल रहा है। बैंक डूबने की आशंका से उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। आश्चर्य है कि पीएमसी में पिछले दस सालों से घपला जारी था, फिर भी किसी को इसकी

भनक नहीं लगी। याद रहे, इस घोटाले की जानकारी रिजर्व बैंक को एक विसलब्ल्योअर के माध्यम से मिली, जिसके बाद 24 सितंबर को उसने बैंक को अपने नियंत्रण में ले लिया और नकद निकासी की सीमा तय कर दी।

घोटाले का पर्दाफाश होने के बाद पता चला कि बैंक ने अपने बांटे हुए कुल 8800 करोड़ के कर्ज में से 73 फीसदी यानी 6500 करोड़ का लोन सिर्फ एक कंपनी हाउसिंग डिवेलपमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (एचडीआईएल) को दिया हुआ था जो अब दिवालिया हो गई है। जांच अधिकारियों का कहना है कि जॉय थॉमस की अगुआई में बैंक मैनेजमेंट ने एचडीआईएल को फंड दिलाने के लिए हजारों फर्जी अकाउंट खोल रखे थे। घपला सामने आने के बाद आरबीआई ने बैंक के हर खाते से निकासी की ऊपरी सीमा शुरू में 1,000 रुपये तय की थी, जिसे बढ़ाकर 10,000 रुपये फिर 25 और अब 40 हजार रुपये कर दिया गया है।

सचाई यह है कि हमारे देश में कई बैंक अभी खतरे में दिख रहे हैं और सहकारी बैंकों की स्थिति खास तौर पर संदिग्ध है। पिछले कुछ समय में देश की कई बड़ी कंपनियों ने बैंकों को अरबों का चूना लगाया है। सहकारी बैंकों का हाल इतना बुरा इसलिए भी है क्योंकि उनके संचालन में राजनीतिक हस्तक्षेप बहुत ज्यादा है। उनकी देखरेख की जिम्मेदारी रिजर्व बैंक की है। अगर उनमें अनियमितता हो रही है तो इससे पता चलता है कि उनका निगरानी तंत्र ठीक से काम नहीं कर रहा। मामले का दूसरा पक्ष यह है कि खुद रिजर्व बैंक भी कई दबावों से जूझ रहा है। केंद्र सरकार को समझना होगा कि अगर बैंकों से जनता का भरोसा टूटा तो यह अर्थव्यवस्था के लिए बेहद खतरनाक होगा। पीएमएसी के संकट पर पूरे देश की नजर है। जनता के पैसों की हिफाजत हर कीमत पर होनी चाहिए।

आज का इतिहास

1662 हुग्यूनो विद्रोह समाप्त हुआ।
1685 फ्रांस नरेश लुई 14 वें के आदेश के बाद प्रोटेस्टेन्टों ने भागना शुरू किया।
1799 यार्क के ड्यूक ने अल्कामार हालैंड में फ्रांसीसियों के आगे हथियार डाल दिए।
1811 नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने राज्य में ब्रिटिश सामानों की होली जलाने का आदेश दिया।
1855 अमरीका में मेक्सिकों से फ्रांसीसी फौजें हाटए जाने की मांग की।
1867 अमरीका ने अलास्का पर औपचारिक रूप से कब्जा किया।
1892 शिकागों और न्यूयार्क के बीच टेलीफोन सेवा शुरू हुई।
1925 फ्रांसीसी फौजों ने दमिश्क पर बमबारी की।
1931 महान अविष्कारक थामस अल्वा एडिसन का निधन।

अपना ब्लॉग

बदहाल होती अर्थव्यवस्था को मुद्दा बनाने की कोशिश

पूनम पांडे। लोकसभा चुनाव में विपक्ष ने बेरोजगारी, महिला सुरक्षा समेत बदहाल होती अर्थव्यवस्था को मुद्दा बनाने की कोशिश की थी तो बीजेपी ने राष्ट्रवाद की इकलौती धुन से विपक्ष के सारे मुद्दे चकनाचूर कर दिए। चुनाव बीता, बीजेपी को प्रचंड बहुमत मिला, लेकिन उसकी राष्ट्रवाद की धुन अब भी बज रही है। लोकसभा चुनावों से लेकर आगामी विधानसभा चुनावों तक इसमें कोई खास बदलाव नहीं दिख रहा। उस वक्त बीजेपी ने बालाकोट एयर स्ट्राइक को राष्ट्रवाद के मुलम्मे में लपेटकर पेश किया और वोटरों का दिल जीत लिया। इस बार वह आर्टिकल 370 और राफेल के जरिए चुनाव प्रचार को परवान चढ़ा रही है। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और गृह मंत्री अमित शाह से लेकर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तक सब इसी धुन को गुनगुना रहे हैं। महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव में राष्ट्रवाद और हिंदुत्व का मसला छाया हुआ है। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ही सबसे ज्यादा चुनावी रैलियां हो रही हैं। सब राष्ट्रवाद के जरिए ही बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।